संस्करण : अप्रैल २००४, सम्वत् २०६१

मूल्य : १२.०० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

॥ श्रीः ॥

अथ वन्ध्यातन्त्र ।

भषाटीकासमेत ।

मङ्गलाचरणम् ।

एनांसि रोगा वपुषस्तमांसि यद्दर्शी-
नादूरत एव यान्ति । वन्दे तमेकं जग-
तामधीशं तेजोमयं सूर्यमदूरविश्वम् ॥

अर्थ—जिसके दर्शन करनेसे सम्पूर्ण शरीरके रोग और पापरूपी अन्धकार तत्काल दूर भागजाते हैं, तथा संसारमें जिससे कोई भी दूर नहीं रहसक्ता ऐसे जगत्के एकही अधिपति तेजोमय सूर्य देवको प्रणाम करूं हूं ॥

वन्ध्याके आठ भेद ।

जन्मवन्ध्या काकवन्ध्या मृतवत्सा तथैवच । स्रवद्गर्भा गलद्गर्भा कन्यापत्यं प्रसूयते ॥ मूढगर्भा रजोहीना ह्यष्टौ वन्ध्याः प्रकीर्तिताः ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके कोईभी सन्तान नहीं होती उसको जन्मवन्ध्या कहते हैं । जिस स्त्रीके केवल एकही पुत्र उत्पन्न होकर फिर कभी सन्तान नहीं हो उसको काकवन्ध्या कहते हैं। जिस स्त्रीके सन्तान उत्पन्न होकर मरजाँय उसको मृतवत्सा कहतेहैं जिसके दो दो मासमें रजोदोष होकर गर्भस्राव होजाय उसको गर्भस्रावी कहते हैं । जिसके दो दो अथवा चार चार मासमें गर्भ रहकरके गलजाय और बढे नहीं उसको गलद्गर्भा कहते हैं जिसके कन्या ही कन्या उत्पन्न होती हैं और पुत्र उत्पन्न नहीं होते

उसको कन्यापत्य कहते हैं जिसके गर्भ रहकर बढे नहीं और दूसरा गर्भ भी नहीं रहे उसको मूढगर्भा कहते हैं जिसके रजोदर्शन नहीं होता वह रजोहीना कही जाती है इस प्रकार आठ प्रकारकी वन्ध्या कही हैं ॥

ऋतुके लक्षण ।

अङ्गकंपो गतेर्भंगो रजःप्राप्तौ च योषिताम् । सक्षौद्रसर्पिः संकाशमंगस्पंदश्च दोषकृत् ॥

अर्थ-इसके अतिरिक्त स्त्रियोंके ऋतुदोषसेभी गर्भ नहीं रहताहै । अब ऋतुदोषके लक्षण कहते हैं। जिसके रजस्वला होते समय कम्प हो और चलनेमें असमर्थ होजाय अथवा सहत और घीकी समान रजोदर्शन हो उसको ऋतुदोष कहते हैं ॥

अङ्गमर्दो योनिशूलः कामासक्तेर्भवेत्स्त्रियः । रजःप्राप्तौ च नारीणां चिन्तावैकल्यरोदनम् ॥

अर्थ–मैथुनके समय जिस स्त्रीका शरीर दुखने लगे और योनिमें पीडा होनेलगे उसको योनिरोगग्रसित जानना, और ऋतुधर्मके समय चिन्ता व्याकुलता और रोदन करे तो वह कोई देवदोष जानना॥

शुद्ध आर्तवके लक्षण ।

जपाकुसुमसंकाशं पक्वबिंबफलप्रभम् । एवं रजःस्रुतौ नारी गर्भवत्यचिराद्भवेत् ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जवा (गुडहल) के फूलकी समान और पकी कन्दूरीकी समान रजोधर्म होय तो उसको शुद्ध रजोधर्म जानना और यह शीघ्रही गर्भको धारण करती है ॥

वात और मेदपीडित आर्तवके लक्षण ।

जम्बूपक्वफलाकारं तथा नीलीनिभं क्वचित् । कर्बुरं गंधसंयुक्तं मेदोवातैश्च पीडितम् ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके पक्की जामुनकी समान रजोधर्म होय नीलके रंगका अथवा बहुत रजोधर्म होय तथा उसमें गन्ध होय उसको मेद धातु तथा वायुपीडित जानना ॥

ऋतुदोषके विशेष लक्षण ।

रक्तग्रन्थियुतं कोष्ठं मर्यादोल्लंघितं रजः । पद्ममाकुंचितं चैव मर्मणावेष्टितं क्वचित् ॥ कीटविद्धन्तु सच्छिद्रं नाभेः शूलं प्रदृश्यते । वमनोद्गारहृत्कंपाः स्वेदो दाहश्च जायते ॥ प्रलापः पीतता

वक्रे नेत्रे दाहस्तथैव च । कंठोष्ठतालुशोषश्च नेत्रस्रावो मदोन्मदः ॥ एवं विलोकिते चिह्ने चिरं गर्भं बिभर्ति सा । विपरीतेषु चिह्नेषु वन्ध्या प्रोक्ता विचक्षणैः ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके उदरमें रुधिरकी गांठ पडजाय जो गर्भस्थितिसे एक मासके उपरान्त रजस्वला होय जिसका कमल सूख गयाहो और जिसके कमलपर सूजन आगई हो जिसके कमलमें किसी प्रकारके कृमि पडजाँय और बहुत सूक्ष्म छिद्र होगयेहों नाभिमें शूल होय नेत्रोंसे जल निकले, वमन करे डकार आवे छाती दूखै, पसीना आवे दाह होय प्रलाप होय मुख पीला पडजाय, नेत्रोंमें दाह होय, तालु और कंठ एवं ओष्ठ सूखजाय यह सब रजोदोषके लक्षण जानने जिसमें यह चिह्न होय

वह स्त्री बहुत दिनों तक गर्भको धारण करतीहै यह आठ प्रकारकी वन्ध्याओंसे पृथक् है और इसके विपरीत चिह्नवालीको विचक्षण पुरुष वन्ध्या कहतेहैं ॥

रक्तेन पित्तवाताभ्यां श्लेष्मणा सन्निपाततः । ग्रहदोषविकारैश्च देवतानां च कोपने ॥ अभिचारकृतेर्गर्भः पुरुषेश्चाल्परेतसैः ॥

अर्थ-रुधिरके विकारसे वात, पित्त, कफसे तथा सन्निपातसे और दूषित ऋतुसेभी गर्भ नहीं रहता है । तथा ग्रहोंके दोषसे देवताओंके कोपसे और अभिचार अर्थात् गुरु, वृद्ध, पितृ और देवताओंके शापसे भी गर्भ नहीं रहता है । एवं पुरुषका अल्पवीर्य होनेसे भी स्त्रीके गर्भ नहीं रहता है ॥

इसके पश्चात् पुरुषके वीर्यमें जो दोष होते हैं उनका वर्णन करे हैं ।

पुरुषके वीर्य्यमें नौ दोष हैं ।

वृद्धो मध्यो मृदुश्चैव त्रिविधः पुरुषः स्मृतः । किशोरो द्वादशाब्दस्तु षोडशांतः प्रकीर्तितः ॥ तदूर्ध्वं त्रिंशतं यावद्युवा स प्रोच्यते बुधैः । पञ्चाशदब्दः स्थविरस्तदूर्ध्वं वृद्ध उच्यते ॥

अर्थ–प्रथम पुरुष तीन प्रकारके होते हैं, बालक युवा और वृद्ध बारह वर्षसे लेकर सोलह वर्षकी अवस्थातकके पुरुषको किशोर कहते हैं, तीस वर्ष पर्य्यन्तके पुरुषको पंडित लोग युवा कहते हैं, पचासवर्षतकके पुरुषको स्थविर कहते हैं, और पचासवर्ष पश्चात् वृद्ध कहा जाता है ॥

पुरुषके नौ दोषोंके नाम ।

क्लीबं लघुद्रवं हीनं षंढं मेहैश्च दूषितम् । रक्तोद्रेकी रुगार्तश्च विषसेवी

तथैव च । सुरापेयी च दोषाश्च नवैते पुरुषे स्मृताः ॥

अर्थ–नपुंसक १ थोडे वीर्यवाला २ शक्तिहीन ३ वीर्यरहित ४ प्रमेहरोगी ५ जिसके वीर्यके बदले रुधिर निकलताहोय ६ उपदंशरोगी ७विषेली वस्तु सेवन करनेवाला ८ और मदिरा पीनेवाला ९ यह नौ दोष पुरुषके कहे हैं अर्थात् उक्त मनुष्योंके सन्तान ठीक नहीं होती है ॥

संप्राप्ते संगमे यस्य लिंगदाहः प्रजायते । रजोग्निर्ज्वलिनं बीजं बीजघातं तु तं वदेत् ॥

अर्थ–जिस पुरुषके स्त्रीप्रसंग करते समय लिंगमें दाह होय और वीर्य्य अग्निकी समान गरम होय तो उसको वीर्यघात कहते हैं ॥

शुद्ध वीर्यके लक्षण।

मत्स्यगन्धप्रतीकाशं बीजं तालकसन्निभम् । मेचकं मधुसंकाशं धूमाभं फेनबुद्बुदम् ॥ क्षिप्तेंभसि निमज्जेत गुणाधिक्यं प्रकीर्तितम् ॥

अर्थ–जिसके वीर्यमें मछलीकी समान गन्ध आवे कुछेक पीला होय मेचककी समान वर्णवाला सहत और धुएकी समान रंगवाला झाग तथा बबूलेकी समान जिसका वीर्य होय और पानीमें डालनेसे डूबजाय ऐसा वीर्य अत्यन्त गुणवाला होताहै ऐसे वीर्यसे अवश्य गर्भ रह जाता है॥

प्लवते यस्य बीजं तु तद्वीजं तन्वपत्यकम्। तदनुत्पत्तिकं बीज भोजभेडेन भाषितम् ॥

अर्थ–जिसका वीर्य पानीमें डालनेसे नहीं डूबे अर्थात् ऊपर तैरे उसको हलका वीर्य कहतेहैं इससे गर्भ शीघ्र नहीं रहता ऐसा भोज तथा भेड आचार्यने कहा है ॥

तस्य मूत्रेण मुद्गास्तु वापनीया विचक्षणैः। अंकुरः सदृशो मुद्गैः कदाचिदपि दृश्यते ॥ भोगयोग्यं तदा ज्ञेयं शुभदं तद्द्वयोर्भवेत् । तदा सन्तानसंप्राप्तिश्चिरं वा ह्यचिरेण वा ॥

अर्थ–पुरुष तथा स्त्रीके मूत्रको एक मट्टीके पात्रमें पृथक् रखकर उसमें मूंगको बोवे जब मूंगमें अंकुर फूटे और वह मूंगके वर्णकी समान होय तो उस स्त्री और पुरुष दोनोंको गर्भ रहनेके योग्य जानना ऐसे स्त्री पुरुषोंको कुछदिनमें अथवा तत्काल गर्भ रह जाता है ॥

येषां शुक्रेण शुक्राश्च प्रस्फुटा न च सांकुराः। वन्ध्यत्वं तत्र विज्ञेयं स्त्रीणां वा पुरुषस्य वा॥

अर्थ-जिसके शुक्रमें बूंद फूटजाय और अंकुर नहीं निकले तो उस स्त्री अथवा पुरुषको दोषयुक्त जानना और उसके गर्भ नहीं रहता इस कारण उसको वन्ध्यात्वदोषयुक्त कहते हैं॥

विना रजोदर्शनके प्रसंग करनेमें दोष।

रजोहीनां च यो नारीं कुमारीं यदि गच्छति। स दोषं प्राप्नुयान्मूढोऽप्यचिरेण न संशयः॥

अर्थ-जो स्त्री रजस्वला नहीं हुई अथवा कुवांरी होय उसके साथ यदि पुरुष प्रसंग करे तो उस मूर्खको थोडे कालमें घोरदोष प्राप्त होता है इसमें संशय नहीं॥

अष्टाब्दैकादशं यावत्कुमारीति निगद्यते। तया संगं कृते दोषो महान्स्यादुभयोरपि॥

अर्थ-आठ वर्षसे लेकर ग्यारह वर्षतककी अवस्थावालीको कन्या कहते हैं, इस कारण इस अवस्थावालीके साथ पुरुषको मैथुन नहीं करना चाहिये और जो मैथुन करे तो स्त्रीपुरुष दोनों घोर दोषोंसे ग्रसित होजाते हैं॥

दूषित रज और वीर्यके लक्षण।

दाहकंपभ्रमोल्लासश्लेष्माधिक्यं शिरोऽव्यथा। नाभिशूलमुरःशूलमंत्रकूजनक्लेदनम्॥ भेदस्पंदश्च गात्राणां मोहःकंडूश्च देहिनाम्। कराग्निकर्णकंडूश्च गात्रगंधिश्च दाहवान्॥ दन्तादीनां मलाढ्यत्वं मंदाग्नित्वं प्रचीयते॥

इत्येवं ज्ञायते पुंसां लक्षणेन भिषग्वरैः ॥ रेतोदोषयुताः पुंसो रजोदोषयुताः स्त्रियः ॥

अर्थ–स्त्री और पुरुषके समागमके समय शरीरमें दाह, कंप, भ्रम, उबकाई, कफ, शिरमें पीडा, नाभिमें शूल, आंतोंका बोलना, क्लेद, भेदनेसरीखी पीडा, अंगोंका फडकना, मूर्छा, शरीरमें खुजली होय, हाथ पैर और कानोंमें खुजली, शरीरमें दुर्गंध आवे दांतोंमें मैलका जमना, जठराग्निकी मंदता और अन्नका नहीं पचना, यह लक्षण जिस स्त्री और पुरुषके होंय उस स्त्री तथा पुरुषका वीर्य और रज दूषितसमझना ॥

तयोर्मिलितयोश्चैव न त्वपत्यं प्रजायते । विपरीतं तु तज्ज्ञात्वा रजो रेतश्च दूषितम्॥

अर्थ–ऐसे वीर्य और रजवाले स्त्रीपुरुषोंके सन्तान उत्पन्न नहीं होती और इसके विपरीत जिसके लक्षण होंय अर्थात् उपरोक्त दूषणोमेंसे कोई दूषण न हो तो तत्काल सन्तान उत्पन्न होती है ।

अब सन्तान उत्पन्न होनेकी विधि कहते हैं ।

शुद्धार्तवां दोषविमुक्तशुक्रः सुगंधलेपैः परिलिप्तगात्राम् । प्रशस्तनक्षत्रदिने प्रहृष्टां नारीमुपेयाद्दयितः सुतार्थी ॥

अर्थ–निर्दोष अर्थात् रोगरहित शुद्धवीर्यवाला ऐसा मनुष्य अनेकप्रकारके उत्तमोत्तम सुगन्धित पदार्थोंका शरीरमें लेप करके शास्त्रोक्त विधिसे शुभ नक्षत्र और शुभ दिनमें प्रेमपूर्वक ऋतुस्नानके अन्तमें अनेक प्रकारके वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित किया है शरीर जिसने ऐसी स्त्रीके पास पुत्रकी इच्छा करता हुआ जावे ॥

दिनेषु युग्मेषु पुमान्प्रदिष्टः प्रोक्ता न्यथा स्त्री तदनल्पबुद्धिः । विचार्य सर्वं सुस्थितः प्रमत्तः प्रवृद्धशुक्रो दयिताम्रुपेयात् ॥ आहाराचारचेष्टाभिर्यादृशीभिः समन्वितौ । स्त्रीपुंसौ समुपेयातां तयोः पुत्रोपि तादृशः ॥ रेतोधिक्ये भवेत्पुत्रो रजोधिक्ये तु कन्यका । नपुंसकः समत्वे तु यथेच्छा पारमेश्वरी ॥

अर्थ—जिस दिनसे स्त्री रजस्वलाहुई होय उस दिन से सम अर्थात्४-६-८-१०-१२-१४-१६वीं रात्रिमें पुरुष स्त्रीका संसर्ग करे तो पुत्र उत्पन्न होताहै और विषम अर्थात् ५-७-९-११-१३-१५ इन रात्रियोंमें प्रसंग करे तो कन्या उत्पन्न होती है इस कारण

बुद्धिमान् पुरुषोंको उचित है कि, अच्छे प्रकार विचार कर उत्तम औषधियोंको सेवन करके वीर्यको शुद्ध कर स्त्रीके पास जाय, जैसे आहार और आचार तथा चेष्टासे स्त्रीपुरुष समागम करते हैं उसीके अनुसार उनके पुत्रभी आहार,आचार और चेष्टावाला उत्पन्न होता है, पुरुषका वीर्य अधिक होय और स्त्रीका रज थोडा होय तो पुत्र उत्पन्न होता है और स्त्रीका रज अधिक होय और पुरुषका वीर्य थोडा होय तो कन्या उत्पन्न होती है और दोनोंका बराबर होय तो नपुंसक सन्तान उत्पन्न होती है आगे देवइच्छा है ॥

रक्ते शुक्रमकाले च पतितं निष्फलं भवेत् । शुक्रक्षये नरे षंढे नारी गर्भं दधाति न ॥ एवं विलोकयेत्सम्यग्दोषज्ञानं भिषग्वरः ॥

अर्थ-और रजमें वीर्य गिरनेसे अथवा विना समय वीर्य गिरनेसे निष्फल जाता है उससे कभी गर्भ नहीं रहता. जो पुरुष वीर्यहीन होय अथवा नपुंसक होय तो उनसेभी स्त्री गर्भको धारण नहीं करतीहै. इस प्रकार उत्तम वैद्योंको अच्छे प्रकारसे दोषोंको अवलोकन करना चाहिये॥

पूर्वजन्मार्जितं पापं पीडयेज्जन्मजन्मनि । तदहं संप्रवक्ष्यामि स्वल्पमार्गेण सूचितम् ॥ ब्रह्मघ्नो बालघाती च गोघ्नश्चान्योऽपि घातकः । आरामतोयघाती च परदाराभिगामिनः ॥ पक्षिघाताश्च ये प्रोक्ता ये च विश्वासघातकाः । ते च जन्मान्तरं प्राप्य ह्यनपत्या भवंति वै ॥ मणिमुक्ताप्रवालादिवज्रवैडूर्यहारकः । गोमेदरत्नहारी च मृतापत्यः प्रजायते ॥ कूष्माण्डफलहारी च तथान्यानि फलानि च । तथा जन्मान्तरं प्राप्य गलद्गर्भा भवन्ति वै ॥ अभक्ष्यभक्षणाच्चैव सुरापी गुरुतल्पगः । देवद्रव्यापहारी च कन्यापत्यं प्रजायते ॥ गोत्रजायाभिगमने श्वश्रूस्वसृस्नुषारतिः । तेन पापेन देहस्य अपुत्रत्वं प्रजायते ॥

अर्थ-पूर्वजन्ममें किये हुए पाप प्रत्येक जन्ममें पीडित करते हैं सो उन पापोंके उदयसेभी सन्तान उत्पन्न नहीं होती, अब उनको संक्षेपसे कहताहूँ। ब्रह्महत्या (ब्राह्मणको मारनेवाला), बालहत्या (बालकोंको मारनेवाला), गोहत्या (गाय बैलको

मारनेवाला), अन्यान्यजीवोंको घात करनेवाला, बागबगीचोंका नष्ट करनेवाला, जलाशयको नष्ट करनेवाला,परस्त्रीगमन करनेवाला, पशु पक्षियोंका वध करनेवाला और विश्वासघात करनेवाला यह सब जन्मजन्मांतर संतानसे रहित होतेहैं,तथा रत्न मोती प्रवाल,वज्र, वैदूर्य और गोमेद रत्न इत्यादिको चुराने से इस जन्ममें सन्तान होहोकर मरजाती है। कूष्माण्ड(पेठा) आम तथा अन्यान्यफलोंको चुराने से इस जन्ममें गर्भपात होजाता है तथा अभक्ष्यपदार्थोंको भक्षण करनेसे, मदिरा पीनेसे अगम्य स्त्रियोंमें गमन करनेसे, गुरुकी स्त्रीके साथ गमन करनेसे, देवताओंका द्रव्य खानेसे एवं औरभी अनेक पापकर्मोंसे पुरुषके कन्या उत्पन्न होतीहै, अपनेगोत्रवाली स्त्रीके साथ गमन करनेसे,सास और बहिनके साथ गमन करनेसे,पुत्रकी स्त्रीके साथ गमन करनेसे उस पापके प्रभावसे उसके सन्तान उत्पन्न नहीं होती॥

तस्य पापविशुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तं तु कथ्यते । गावः स्त्री बालकश्चैव ये चान्ये कष्टसंस्थिताः ॥ विपत्तिभ्यश्च तन्मोक्षः कर्तव्यश्च सुधीमता । जंतवो विविधाकारा ये च निर्बंधसंस्थिताः ॥ ते सर्वे मोक्षणीयाश्च सततं द्रव्यशक्तितः । एवं कृते तु सर्वेषां पश्चात्कृच्छ्रं समाचरेत् ॥ दया दानं तपो होमो देवतानां च पूजनम् । आदौ चैवोपचारं च पश्चाद्भोजनयोजनम् ॥

अर्थ-यह जो पाप कहे उन पापोंकी शुद्धिके अर्थ प्रायश्चित्त विधान कहताहूं । गाय, स्त्री, बालक और अनाथ इनको कष्टमेंसे छुडानेसे पूर्वोक्त पापोंसे मुक्त होता है, बंदीखानेमें पडेहुये अनेक प्रकारके

जीवोंको अपनी शक्तिके अनुसार छुडानेसे पूर्व पाप दूर होता है, तत्पश्चात् कृच्छ्रादि चान्द्रायण करना, जीवोंपर दया रखनी, दान करना, तप करना, हवन करना और देवताओंका पूजन करना यह सब उपचार करे, पश्चात् असमर्थोंको भोजन करावे इससे पाप दूर होकर सन्तान उत्पन्न होती है यह संक्षेपसे प्रायश्चित्तविधान कहा ॥

अथ ऋतुलक्षण तथा और औषधी प्रयोग।

ऋतुः सूक्ष्मतरश्चैव कुंकुमोदकसंनिभः । कटिशूलं भवेत्तस्या योनिशूलं समज्वरः ॥ मारुतस्य विकारोऽयं तस्याः कर्म समाचरेत् ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके थोडा रजोदर्श होय अथवा केशरके जलकी समान रजोदर्श होय कमर तथा योनिमें शूल होय और ज्वर होय उसके वातजनित ऋतुदोष जानना ॥

मूलं तु सहकारस्य तथा व्याघ्रपदस्य च । त्रिवृतासंभवं मूलं क्षीरेणालोड्य तं पिबेत् ॥ सप्ताहं पंचरात्रं वा यावत्स्रवति शोणितम् । ततो योन्या विशुद्धायामिदं दद्यान्महौषधम् ॥ लक्ष्मणाक्षीरसंयुक्तं नस्ये पाने प्रयोजयेत् । तेन सा लभते पुत्रं घ्राणे वा दक्षिणे ततः ॥ वामनाड्यां भवेत्कन्या रूपेणातीव शोभना ॥

अर्थ-उसकी औषधी कहते हैं। आमकी जड, कटाईकी जड, निसोत इन सबको दूधके साथ पीसकर सात दिनतक या पांच दिनतक अथवा तीन दिनतक किंवा जबतक रजोदर्श होय तबतक पीवे, पश्चात् योनिके शुद्ध होनेपर लक्ष्मणाकी जडको दूधमें पीसकर पान करे और सुंघावे, इस औषधिकी

दहिनी नाकके छिद्रमें बिन्दु डालनेसे पुत्र उत्पन्न होता है और बांई नाकमें सुंघानेसे अत्यन्त स्वरूपवती कन्या उत्पन्न होती है ॥

यस्यापि निहितं पुष्पं व्रणैः समभिलक्षयेत् । पक्वजम्बूफलाकारमुष्णं स्रवति शोणितम् ॥ कटिशूलं भवेत्तस्या उदरं च प्रदह्यते । पुष्पस्रावं करोत्युष्णमेतत्पित्तस्य लक्षणम् ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके मासिक धर्मका रुधिर पके जामुनके फलकी समान अथवा गूलरके फूलकी समान एवं अत्यन्त गरम और उष्ण होय, कमरमें शूल उदरमें दाह होय उसको पित्तजनित रजोदर्श जानना ॥

औषधं तस्य वक्ष्यामि येन गर्भं च धारयेत् । उत्पलं तगरं कुष्ठं यष्टी

मधुकचन्दनम् ॥ एतानि समभागानि अजाक्षीरेण पाययेत् । त्रिरात्रं पञ्चरात्रं वा यावद्वहति शोणितम् ॥ ततो योन्यां विशुद्धायां ततो दद्यान्महौषधम् । लक्ष्मणा क्षीरसंयुक्ता नस्ये पाने प्रशस्यते ॥ तेन सा लभते पुत्रं रूपवंतं महाद्भुतम् ॥

अर्थ–अब उसकी औषधी कहते हैं कि, जिससे स्त्री गर्भको धारण करती है । नीलोत्पल, तगर, कूठ, मुलैठी, सफेद चंदन यह सब समान भाग लेकर बकरीके दूधमें पीसकर तीन रात्रि या पांच रात्रि अथवा सात रात्रि अथवा जबतक रजोदर्श होय तबतक इसको पीवे । पश्चात् योनिके शुद्ध होनेपर लक्ष्मणाकी जडको गायके दूधमें पीसकर पीवे

और सुंघावे इससे सर्वगुणसम्पन्न पुत्र उत्पन्न होता है ॥

कफेन निहतं पुष्पं प्रणाशममिलक्षयेत् । बहुलं पिच्छिलं चैव नातिरक्तं भवेद्रजः ॥ नाभिमंडलमूलेन शूलं भवति दारुणम् ॥

अर्थ-जिस स्त्रीका रजोदर्श कफसे दूषित होय उसके लक्षण यह कि, रजोदर्शका अधिकतर होना और अत्यन्त लाल नहीं होना किन्तु कुछेक सफेदी लिये होता है और उसकी नाभिमें घोर पीडा होती है। अब उसकी चिकित्सा कहते हैं॥

त्रिकटुत्रिफलावह्निः समभागं प्रकल्पयेत् । हिंगुर्देयोऽष्टभागेन अजाक्षीरेण तत्पिबेत् ॥ त्रिरात्रं पञ्चरात्रं

वा यावद्वहति शोणितम् । ततो योन्यां विशुद्धायामिदं दद्यान्महौषधम् ॥ लक्ष्मणां क्षीरसंयुक्तां नस्ये पाने च योजयेत् । तेनसा लभते पुत्रं लक्षणोक्तं सुपंडितम् ॥

अर्थ-त्रिकटु (सोंठ, मिरच, पीपल), त्रिफला (हरड, बहेडा, आमला) और चीता यह सब समान भाग लेकर उसमें एक औषधिका आठवां भाग हींग मिलाकर बारीक पीसकर बकरीके दूधके साथ तीन रात्रि, पांच रात्रि अथवा सात रात्रि, या जबतक रजोदर्श होय तबतक पान करे। पश्चात् योनि शुद्ध होजाय तब नीचे लिखी औषधि सेवन करे। लक्ष्मणाकी जडको गायके दूधके साथ पीसकर पीवै तथा सुंघावै तो अत्यन्त गुणवान् और पंडित पुत्र उत्पन्न होता है ॥

सन्निपातहते पुष्पे ज्वरस्तीव्रः प्रजायते । शोणितं च भवेत्सूक्ष्ममत्युष्णं पिच्छिलं बहु ॥ कुक्षिकोदरयोन्यां च कट्यां शूलं च जायते । गात्रभंगो भवेत्तस्य निद्रा तीव्रा तु जायते ॥ सन्निपातभवं दोषं लक्षणेन तु लक्षितम् ॥

अर्थ–सन्निपातसे जिस स्त्रीके पुष्प दूषित होता है उसके रजोदर्शके समय घोर ज्वर थोडा २ रुधिर निकले और वह गरम काला और चिकना होता है, कोख उदर योनि और कमरमें शूलकी पीडा होती है, शरीर टूटे, अत्यन्त निद्रा आवे, इसका सन्निपातदूषित ऋतु जानना ॥

तस्याः कर्म सदा कार्यं दद्यान्मंत्रितमेव च । गन्धर्वहस्तमूलं च

सहकारं च वेश्मनि ॥ उत्पलं तगरं कुष्ठं यष्टीमधुकचन्दनम् । अजाक्षीरेण पिष्टानि सप्ताहं दापयेच्च तत् ॥ ततो योन्यां विशुद्धायां भिषग्दद्यान्महौषधम् । लक्ष्मणां वंध्यककोटीं गवां क्षीरेण पेषयेत् ॥ सदाभिमंत्रितं कृत्वा नस्ये पाने प्रदापयेत् । तेन सा लभते पुत्रं यावदेवं समाचरेत् ॥

अर्थ–सन्निपातसे दूषित रजस्वला स्त्रीको यह औषधि अभिमंत्रित करके देवे, अण्डकी जड, आमकी जड, निशोथ, नीलोत्पल, तगर, कूठ, मुलेठी; सफेद चन्दन यह सब समान भाग लेकर बकरीके दूधमें पीसकर सात दिनतक पीवे । सफेद आककी जड, सफेद कटेरीकी जड, सफेद कोंपल, लक्ष्मणा, बांझककोडा यह सब समान

भाग लेकर गायके दूधमें पीसकर मिलावे शुद्ध मंत्रसे अभिमंत्रित करके सुंघावे और पिलावे जबतक पुत्र उत्पन्न न हो तबतक इस प्रकार करे ॥

अन्यद्वन्ध्याष्टकं वक्ष्ये सर्वतन्त्रेषु गोपितम् । त्रिपक्षी शुभ्रती सज्जा त्रिमुखी व्याघ्रिणी बकी ॥ कमली व्यक्तिनी चैव तासां चिह्नं वदाम्यहम् ॥

अर्थ–अब और आठ प्रकारकी वन्ध्याओंको कहते हैं जो कि, सर्वतन्त्रोंमें गुप्त हैं ।(१) त्रिपक्षी (२) शुभ्रती (३) सज्जा (४) त्रिमुखी (५) व्याघ्रिणी (६) बकी (७) कमलिनी (८) व्यक्तिनी । इस प्रकार यह आठ वन्ध्या कही हैं अब इनके लक्षण कहताहूँ ।

त्रिपक्षी नाम या वन्ध्या त्रिपक्षे पुष्पिता भवेत् । द्वे जीरके श्वेतवचा

कर्कोटयाश्च फलं समम् ॥ तण्डुलोदकसंपिष्टं चोत्थिता सूर्यसम्मुखी । त्रिदिनं च पिबेन्नारी दुग्धभक्तं च भोजनम् ॥ तेन गर्भो भवेन्नार्य्याः सत्यमेतन्न संशयः ॥

अर्थ–जो स्त्री तीन पक्ष अर्थात् डेढ महीनेमें ऋतुमती होती है उसको त्रिपक्षी कहते हैं । अब उसकी चिकित्सा कहते हैं । सफेद जीरा, काला जीरा, सफेद वच और ककोडेके फल यह सब समान भाग लेकर चावलोंके जलमें पीसकर सूर्यके सामने खडी होकर तीन दिनतक पीवे और दूध चावलोंका भोजन करे तो अवश्यही गर्भ रहता है ॥

शुभ्रती नाम या वन्ध्या चिह्नं तस्या वदाम्यहम् । गात्रं संको-

चते नित्यं देहे चैव विवर्णता ॥ गर्भस्तस्या न जायेत सज्जा वंध्या च कथ्यते । अप्रमाणैश्च दिवसैस्तस्याः पुष्पं प्रजायते ॥ जीरे क्वां समंगां च गृह्णीयाच्छुभवासरे । कर्कोटीं शृंखलाकारां पिष्ट्वा तण्डुलवारिणा ॥ दिनत्रयं यता नारी सूर्यस्य सम्मुखी पिबेत् । सदुग्धं षष्टिकान्नं च भक्षयेद्दिनसप्तकम् ॥ तेन गर्भो भवेन्नार्य्यास्त्रिमुखी नाम कथ्यते । तस्या चिह्नं प्रवक्ष्यामि मैथुने सलिलं स्रवेत् ॥ भोजने मैथुने लौल्यं गर्भस्तस्या न विद्यते ॥

अर्थ–अब शुभ्रती नामक वन्ध्याके लक्षण कहते

हैं उसका शरीर सदैव सकुचा रहै, और सम्पूर्ण देहमें विवर्णता होती है । शुभ्रती वन्ध्या असाध्य है इसलिये इसकी चिकित्सा नहीं कही है । अब सज्जावन्ध्याको कहते हैं, सज्जावन्ध्याके रजोदर्श अप्रमाणिक दिनोंमें होताहै कभी देरमें ऋतुमती होती है कभी थोडेही दिनोंमें रजस्वला होती है । जीरा, काला जीरा, वच, मंजीठ, ककोडा और हडसंकरी यह सब औषधि समान भाग लेकर चावलोंके जलमें पीसकर तीन दिनतक सूर्यके सम्मुख खडी होकर यत्नपूर्वक पीवे और साठीके चावलोंका भात दूधके साथ सात दिनतक भोजन करे। इस प्रकार करनेसे गर्भ रहकर उत्तम सन्तान होती है । अब त्रिमुखी वन्ध्याको कहते हैं, अब उसके लक्षण कहतेहैं। उसके मैथुनके समय योनिमेंसे पानी गिरता है वह सदैव भोजन और मैथुनमें

च्वलीन रहती है, उसके गर्भ नहीं रहता है इसलिये उस त्रिमुखी वन्ध्याकी चिकित्सा नहीं है ॥

व्याघ्रिण्या उत्तरे कालेऽपत्यमेकं प्रजायते । त्रिपक्ष्युक्तं प्रदातव्यमौषधं पुत्रदायकम् ॥

अर्थ-व्याघ्रिणी वन्ध्याके अधिक अवस्थाके बीतनेपर केवल एकही सन्तान उत्पन्न होती है फिर दूसरी नहीं होती। व्याघ्रिणी वन्ध्याकी त्रिपक्षीनाम वन्ध्याकी समान चिकित्सा करनी चाहिये, जो औषधि त्रिपक्षी वन्ध्याके लिये कही है वही पुत्रको देनेवाली औषधि व्याघ्रिणीवन्ध्याको देनी चाहिये॥

बक्यसृक्स्रवते श्वेतं दशमेऽष्टमके दिने । असाध्या सा सुसाध्या वा औषधं नैव कारयेत् ॥

अर्थ-अब बकी वन्ध्याके लक्षण कहते हैं। बकी

वन्ध्याके सफेद रुधिर धातुकी समान आठवें दशवें दिन गिरता है यह साध्य अथवा असाध्य हो परन्तु इसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥

सलिलं स्रवते योन्याः कमलिन्या निरन्तरम् । असाध्या सा च विज्ञेया औषधं नैव कारयेत् ॥

अर्थ-कमलिनीवन्ध्याके योनिके द्वारा सदैव जल गिरता है यह असाध्य होती है इसलिये इसकी चिकित्सा नहीं करनी चाहिये ॥

व्यक्तिनीनामवन्ध्यायाः प्रमेही भवति स्फुटम् । रक्तापामार्गजं बीजं शर्करामर्दकीफलम् ॥ औषधीं रत्नमालां च गोदुग्धेन प्रपेषयेत् । त्रिः सप्त दिवसं पीत्वा प्रमेहं नाशयेद् ध्रुवम् ॥

कृष्णागुरुकेशरं च कर्कोटीं सफलां

तथा । द्वे जीरके सवत्सागोः क्षीरेणालोड्य सा पिबेत् ॥ दिनत्रयं दुग्धषष्टिभोजनं गर्भधारकम् । लक्षणानि परिज्ञाय औषधीं कारयेत्सुधीः ॥

अर्थ–ग्यक्तिनी वन्ध्याके प्रमेहकी समान सफेद धातु गिरती है । अब उसकी चिकित्सा कहते हैं । बाल चिरचिटेके बीज, मिश्री, कौंचके बीज और रतनजोत इन सब औषधियोंको समान भाग लेकर गायके दूधमें पीसकर तीन सप्ताह तक पीवे तो प्रमेह दूर होता है । पश्चात् काली अगर, नागकेशर, ककोडा, काला जीरा और सफेद जीरा इन सब औषधियोंको समान भाग लेकर बच्चेवाली गायके दूधमें पीसकर तीन दिनतक पीवे और इसपै साठीके चावलोंका भात दूधके साथ खाय तो अवश्य गर्भ रहे उपरोक्त सब वन्ध्याओंके लक्षण जानकर यत्नपूर्वक चिकित्सा करनी चाहिये ॥

अथ नष्टपुष्पायाः पुष्पकरणम् ।

ज्योतिष्मतीकोमलपत्रमग्नौ भृष्टं जवान्याः कसुमं च पिष्टम् । गृहाम्बुना पीतमिदं युवत्याः करोति पुष्पं स्मरमादिरस्य ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके मासिकधर्म नहीं होता है अब उसकी चिकित्सा कहते हैं । मालकांगनीके कोमल पत्ते भुनेहुए और अजवायनके फूल इनको एकत्र कांजीमें पीसकर पान करे तो स्त्रियोंके रज प्रवृत्त होता है ॥

लांगलीकंदचूर्णं वा मूलमापामार्गजं तथा । इन्द्रवारुणिकामूलं योनिस्थं पुष्पबन्धनुत् ॥

अर्थ–कलिहारीकी जडका चूर्ण,अथवा चिर-

चिटेकी जड किंवा इन्द्रायणकी जडके चूर्णको योनिमें रखनेसे रजोधर्म खुलकर होता है ॥

पारावतपुरीषं च मधुना संपिबेत्तुया ।
रजस्वलाभवेन्नारी मूलदेवेन भाषितम् ॥

अर्थ—कबूतरकी विष्ठाको सहतमें मिलाकर पान करनेसे स्त्री अवश्य रजस्वला होती है यह मूलदेवने कहा है ॥

तिलमूलकषायं तु ब्रह्मदण्डीयमूलकम् । यष्टीत्रिकटुकं चूर्णं क्राथयुक्तं च पाययेत् ॥ पुष्परोधे रक्तगुल्मे स्त्रीणां सक्तः प्रशस्यते ॥

अर्थ—तिलकी जडका क्राथ बनाकर अथवा ब्रह्मदण्डीकी जडका क्राथ बनाकर उसमें मुलेठी और त्रिकुटेका चूर्ण डालकर पान करनेसे रजका अवरोध और रक्तगुल्म नष्ट होता है ॥

दूर्वादलं तन्दुलतुल्यभागं निष्पिष्य पिष्टं परिपाचितं च । तद्भक्षयित्वा वनिता प्रनष्टं पुष्पं लभेत स्वबलानुरूपम् ॥

अर्थ—दूर्वाके पत्ते और चावल दोनोंको समान भाग लेकर जलमें पीसकर पिट्ठी बनावे फिर उस पिट्ठीको घीमें पकाकर सेवन करे तो नष्ट रज फिरसे प्रवर्त्तन होता है ॥

अथ मृतवत्साचिकित्सा ।

गर्भः संजातमात्रस्तु पक्षान्मासाच्च वत्सरात् । म्रियते द्वित्रिवर्षाद्वा यस्याः सा मृतवत्सिका ॥

अर्थ—जिस स्त्रीके बालक उत्पन्न होतेही या एक पक्षमें या एक महीनेमें या एक वर्षमें अथवा दो तीन वर्षमें मरजाते हैं उसको मृतवत्सा कहते हैं यह भी

एक प्रकारकी वन्ध्या है अब उसकी चिकित्सा कहते हैं ॥

प्राङ्मुखः कृत्तिकाऋक्षे वंध्याकर्कोटकीं हरेत् । तत्कंदं पेषयेत्तोयैः कर्षमात्रं सदा पिबेत् । ऋतुकाले तु सप्ताहं दीर्घजीवी सुतो भवेत् ॥

अर्थ—कृतिकानक्षत्रमें पूर्वकी ओर मुख करके वांझककोडेकी जडको उखाड लावे, फिर उसके कन्दको जलमें पीसकर सदैव एक तोला पीवे और ऋतुके समय सात दिनतक पीवे तो दीर्घायु पुत्र उत्पन्न होता है ॥

या बीजपूरद्रुममूलकं वा क्षीरेण सिद्धं हविषा विमिश्रम् । ऋतौ हि पीत्वा सुपतिं प्रयाति दीर्घायुषं सा तनयं प्रसूते ॥

अर्थ—जो स्त्री बिजौरे नींबूकी जडको दूधमें पकाकर घी मिलाकर ऋतुकालके समय भक्षण करके पतिके निकट जाती है उसके दीर्घायु पुत्र उत्पन्न होता है ॥

फलघृत ।

मंजिष्ठा मधुकं कुष्ठं त्रिफला शर्करा बला । मेदा पयस्या काकोली मूलं चैवाश्वगंधजम् ॥ अजमोदा हरिद्रे द्वे हिंगुकं कटुरोहिणी । उत्पलं कुमुदं द्राक्षा काकोल्यौ चन्दनद्वयम् ॥ एतेषां कर्षिकैर्भागैर्घृतप्रस्थं विपाचयेत् । शतावरीरसं क्षीरं घृताद्देयं चतुर्गुणम् ॥ सर्पिरेतन्नरः पीत्वा नित्यं स्त्रीषु वृषायते । पुत्राञ्जनयते नारी मेधाविप्रियदर्शनान् । या चैवास्थिरगर्भा स्याद्या

नारी जनयेन्मृतम् । अल्पायुषं वा जनयेद्या च कन्यां प्रसूयते ॥ योनिदोषे रजोदोषे गर्भस्रावे च शस्यते । प्रजावर्द्धनमायुष्यं सर्वग्रहनिवारणम् ॥ नाम्ना फलघृतं ह्येतद्रहस्यं परिकीर्तितम् ॥

अर्थ–मँजीठ, मुलेठी, कूठ, त्रिफला, शर्करा, खिरेंटी, मेदा, क्षीरविदारी, काकोली, असगन्धकी जड, अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, हींग, कुटकी कमल, कमोदनी, दाख, क्षीरकाकोली, चन्दन और लालचन्दन यह प्रत्येक औषधि एक तोला उत्तम गायका घी १ प्रस्थ, सतावरका रस १ प्रस्थ, दूध ४ प्रस्थ इन सबको यथाविधिसे मिलाकर घृतको सिद्ध करे इस घृतको पीनेसे पुरुष स्त्रियोंमें वृषकी समान आचरण करता है इसके प्रभावसे स्त्रियें

मेधायुक्त और स्वरूपवान् पुत्रोंको उत्पन्न करती हैं। जिन स्त्रियोंके गर्भ स्थिर नहीं रहता, अथवा जो मरी सन्तानको उत्पन्न करती हैं जिनके अल्पायु पुत्र उत्पन्न होतेहै अथवा जिनके कन्या उत्पन्न होतीहैं या जिन स्त्रियोंके योनिदोष वा गर्भदोष है और जिन स्त्रियोंके गर्भस्राव होजाताहै उनके लिये यह अत्यन्त हितकारी है, पुत्रोंको बढानेवाला, अवस्थाको स्थापन करनेवाला, और सर्वग्रहोंको निवारण करनेवाला यह परमरहस्य "फलघृत" नामसे कहा है ॥

अथ गर्भप्रद योग ।

पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणी पयसान्वितम् । पीत्वा च लभते पुत्रं रूपवंतं न संशयः ॥

अर्थ–ढाकके एक कोमल पत्तेको गर्भवती स्त्री

दूधके साथ पीवे तो निःसंदेह रूपवान् पुत्रको उत्पन्न करती है ॥

मूलं शिखायाः खलु लक्ष्मणाया ऋतौ निपीय त्रिदिनं पयोभिः । क्षीरान्नचर्या नियमेन भुंक्ते पुत्रं प्रसूते वनिता च चित्रम् ॥

अर्थ-लक्ष्मणाकी जड और पत्तोंको जो स्त्री ऋतुकालमें दूधके साथ तीन दिनतक पीवे और नियमके साथ क्षीरान्न भोजन करे तो अवश्य पुत्रको उत्पन्न करती है ॥

सपिप्पलीकेशरशृंगवेरं भद्रोषणं गव्य घृतेन पीतम् । वन्ध्यापि पुत्रं लभते हठेन योगस्तु सोयं मुनिभिः प्रदिष्टः ॥

अर्थ-पीपल, नागकेशर, अदरख, नागरमोथा

और काली मिरच इन सबको समान भाग लेकर गायके घीमें मिलाकर सेवन करे तो वन्ध्या स्त्रीभी पुत्रको उत्पन्न करती है ॥

तुरंगगंधाघृतवारिसिद्धमाज्यं पयः स्नानदिने च पीत्वा । प्राप्नोति गर्भं नियमं चरन्ती वन्ध्या च नूनं पुरुष-प्रसंगात् ॥

अर्थ-असगन्धको घी और जलमें और दूधमें सिद्ध करके स्नान करके जो स्त्री दिनमें पान करे और नियमसे रहे तो वन्ध्या स्त्रीभी पुरुषके प्रसंगसे अवश्य पुत्रको उत्पन्न करती है ॥

सुश्वेतकंटकीमूलं तन्मयूरशिखाभवम् । त्र्यहं गोपयसा नारी पिबेद्गर्भो भवेद् ध्रुवम् ॥

अर्थ-सफेद कटेरीकी जड और मोरशिखाकी

जडको गायके दूधमें पीसकर तीन दिन पान करे तो निश्चय गर्भ रह जाता है ॥

बला सिताढ्यातिबला मधूकं वटस्य शुंगं गजकेशरं च । एतन्मधुक्षीरगतैर्निपीतं वन्ध्यापि पुत्रं नियतं प्रसूते ॥

अर्थ–खिरेटी, श्वेतकटेरी, कंघी, मुलैठी, वडके अंकुर और नागकेशर इन सबको एकत्र पीसकर सहत और दूधके साथ पान करनेसे वन्ध्या स्त्री भी पुत्रको उत्पन्न करती है ॥

पुत्रसंजीविकामूलं विष्णुक्रांतां सलिंगिकाम् । पीत्वा पुत्रमवाप्नोति न कन्या जायते स्फुटम्॥

अर्थ–जियापोतेकी जड, नीली कोयल, और शिवलिंगी इन तीनों औषधियोंको गायके दूधमें

पीसकर ऋतुस्नानके अंतमें पान करनेसे पुत्र उत्पन्न होता है और कन्या उत्पन्न नहीं होती ॥

श्वेतकुलित्थसम्भूतं मूलं नागबलोद्भवम् । अपराजितामृतुस्नाता गोदुग्धेन समं पिबेत् ॥

अर्थ–सफेद कुलथीकी जड, गंगेरनकी जड, और अपराजिताकी जड इन सबको समान भाग लेकर गायके दूधमें पीसकर ऋतुकालके समय स्त्री पान करे तो अवश्य गर्भको धारण करती है ॥

तिलरसगुडमेतद्द्वौपुरीषाग्नियोगात्तरुणवृषभमूत्रं प्रस्थयुक्तं विपक्वम् । ऋतुदिवसविमध्ये सप्तवारैश्च पीतं जनयति सुतमेतन्निश्चितं पुष्पितेन॥

अर्थ–तिल, रस, गुड और तरुण बैलका मूत्र दो सेर लेकर सबको एकत्र करके अरने उपलोंकी

अग्निमें पकावे । फिर इसको ऋतुकालके समय स्त्री सात दिनतक पीवे तो अवश्य पुत्रको उत्पन्न करती है ॥

अथ योनिशुद्धिकरणम् ।

प्रथमं भगमध्ये तु चणकापोटलीं क्षिपेत् । एकाहं तं प्रकुर्वीत द्वितीयेह्नि च मेथिकाम् ॥ तृतीयदिवसे भृंगी-पोटलीं तु विनिक्षिपेत् । एवं दिन-त्रयं कुर्यात्पश्चाद्भेषजमाचरेत् ॥

अर्थ–अब योनि शुद्ध करनेकी विधि कहते हैं । पहिले दिन चनोंकी पोटली योनिमें रखवावे, दूसरे दिन मेथीकी पोटली रखवावे और तीसरे दिन भृंगकी पोटली रखवावे इस प्रकार तीन दिन करे पश्चात् वैद्य औषधी देवे ॥

एलात्वक्च तमालं च जातीफललवं-

गकम् । जातिपत्री कट्फलं च बद-रीमूलजत्वचम् ॥ पूतना फटकी चैव धातुकी नलदानि च । पद्मा शर्करया चैव करं जफलफो गुडः ॥ कपिफलैः समेतानि सूक्ष्मचूर्णानि कारयेत् । मधुना गुटिकां कृत्वा धात्रीफल-प्रमाणतः ॥ अनेनैव प्रयोगेण गर्भ-धारणमुत्तमम् ॥

अर्थ–इलायची, तज, तेजपात, जायफल, लौंग, कायफल, जावित्री, बेरकी जडकी छाल, हरड, फटकरी, धायके फूल, जटामांसी, कमल, मिश्री, करंजके फूल और गुड तथा पारस पीपलके फूल यह सब समान भाग लेकर खूब बारीक पीसकर वस्त्रमें छानकर सहतमें मिलाकर आमलेकी समान गोली बनाकर स्त्रीकी योनिमें चौथे दिन रक्खे, इस

प्रयोगके करनेसे स्त्रीको उत्तम विधिसे गर्भ रहता है ॥

बीजपूरकबीजानि तथा रुद्रोद्भवा जटा । लिंगी मयूरजाख्या च सम-भागं कुरु द्वयम् ॥ व्यतीतेऽह्नि पिबेन्नारी पुत्रो भवति निश्चितम् ॥

अर्थ-बिजौरे नींबूके बीज, वडकी दाढी, शिवलिंगी और मोरशिखा यह सब समान भाग लेकर ऋतुके तीन दिन पीछे चौथे दिन पीवे इससे निश्चय गर्भ रह जाता है ॥

अश्वगंधीयमूलं तु पाचितं तु गवां पयः । शर्करामधुसंयुक्तं गर्भधारण-कं परम् ॥

अर्थ-असगन्धकी जडको दूधमें पीसकर मिश्री और घी मिलाकर स्त्री पीवे तो इससे गर्भ रहजाता है॥

मातुलुंगस्य बीजं तु दुग्धेनाजेन

शर्करा । घृतेन सहितं लीढं त्रिदिनै-र्गर्भधारणम् ॥

अर्थ-बिजौरे नींबूके बीज, गाय अथवा बकरीके दूधमें पीसकर मिश्री और घी मिलाकर तीन दिन-तक पीनेसे गर्भ धारण होता है ॥

शतावरीरसेनैव गवाजे मूत्रदुग्धके । समभागे ऋतौ पीते पुत्रो भवति सुन्दरः ॥

अर्थ-शतावरके रसका गाय तथा बकरीके दूधमें तथा मूत्रमें मिलाकर पीनेसे अत्यन्त सुन्दर पुत्र उत्पन्न होता है ॥

ऋतौ च काशकीमूलं तंदुलोदकसं-युतम् । पिबेत्सा लभते पुत्रं वन्ध्या चैव प्रसूयते ॥

अर्थ–ऋतुके तीसरे दिन कासकी जडको चावलोंके जलमें मिलाकर पीनेसे वांझ स्त्रीके भी पुत्र उत्पन्न होता है ॥

क्षुद्रा श्वेता च श्वेताद्रिकर्णिका शंखपुष्पिका ॥ श्वेतगुंजा पुनर्नव्यमूलं चोभयलिंगकम् ॥ नागपुष्पं सहदेव्या शतपत्रं च चूर्णयेत् । दध्यन्नसंयुतं देयं गर्भधारणमुत्तमम् ॥

अर्थ––सफेद कटेरी, सफेद कोयल, शंखाहुली, सफेद चौटलीकी जड, पुनर्नवाकी जड, शिवलिंगी तथा ब्रह्मलिंगी, नागकेशर, सहदेई और सेवती इन सबको बारीक चूर्ण करके अथवा मिश्रीमें मिलाकर एक एक पैसेभर दही और चावलोंके साथ खावे इससे स्त्री उत्तम गर्भको धारण करती है ॥

दुग्धेन वामनीमूलं गर्भं धृत्वा त्रिवार्षिकम् ॥

अर्थ–सनकी जडको दूधके साथ पीनेसे तीन वर्षका गर्भभी मुक्त होजाता है ।

मृतवत्सा तु या नारी गर्भोत्पत्तिरनंतरम् ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके सन्तान होहोकर मरजाती होय उसके प्रथम गर्भका निश्चय करके पश्चात् औषधि करे ॥

तस्यौषधं हि कर्तव्यं तुम्बकं कटुकं तथा । पानीयेन प्रपूर्याथ ढंकणं दीयते पुनः ॥ पथि सरसि संपूज्य रामाया दीयते करे । गृहस्योदुम्बरमध्ये भूमौ निक्षिप्यते यदा ॥ संपूर्णे चार्भके जाते मासे वापि प्रसूयते ।

बालकं जातमात्रं तु बहिर्निष्कासयेत्तदा ॥ तन्नीरं तुंबिकातस्थं पाययेच्चापि चार्भकम् । पीते वारत्रयं यावत्तावद्भवति देहिनः ॥ मनोरथाः प्रपूर्यंते सुभगा वरवर्णिनी । जातमात्रे शिशौ देयं गुडमेलीयकं तथा ॥ कोष्णं जलेन कर्तव्यं द्विवारं तु ददेत्स्वयम् । ऋतौ चैव पिबेत्पुत्रं प्राप्नुयन्नात्र संशयः ॥

अर्थ—कडवी तुम्बीको लेकर उसका ढक्कन उतारकर भीतरसे साफ करके जलाशयमें जाकर उसमें जल भरकर उसकी पूजा करे पश्चात उसका ढक्कन ढककर गर्भवती स्त्रीके हाथमें देवै फिर घरको आवे पीछे घरके गूलरके वृक्षके

नीचे पृथ्वीमें गाडदेवे । नौमासके पश्चात् जब सन्तान उत्पन्न होजाय तब सन्तानको तुरन्त बाहर लाकर उस तुम्बीको उखाडकर उस तुम्बीके जलकी एक बूंद सन्तानके मुखमें डाले इस प्रकार तीन दिन बराबर करनेसे सन्तान जीवित रहती है पश्चात् उस बालकको गुड और एलुएको उसतुम्बीके जलमें घिसकर आधीरत्ती बराबरपिलावे इससे सन्तान जीवित रहती है इसमें संशय नहीं॥

अथ वन्ध्यापरीक्षा ।

शरावे नूतने नारीमूत्रे तु चणकान्ददेत् । रात्रौ तु स्थापयेदेव पर्यकात्तदधः पुनः ॥ परीक्षेदंकुरान्सर्वान्रक्तान्वाप्यर्धकृष्णकान् । कृष्णे भवति वंध्यात्वं रक्ते भवति पुत्रिणी॥

अर्थ—कोरे मट्टीके पात्रमें स्त्रीके मूत्रको रखकर

उसमें चने डाले और उस बर्तनको रातभर खाटके नीचे रक्खे और सबेरेको उस बर्तनको देखे जो उसमें काले अंकुर निकले तो सन्तति उत्पन्न नहीं होती, और लाल अंकुर निकले तो सन्तान उत्पन्न होती है ॥

मलयजपलयुग्मं ताम्रसारं तथैव
मसितमुदयवर्णास्त्वक्फलंयुग्ममेव ।
घृतपलयुगमेतस्नातकानां प्रदेयं भ-
वति नियतगर्भश्चौषधस्य प्रभावात् ॥

अर्थ–सफेद चन्दन २ पल, लालचन्दन २पल, काले कठूमरके फल २ पल तथा छाल इन सबका चूर्ण करके २ पल घीमें चौथे दिन स्त्रीको चटावे इस औषधिके प्रयोगसे निश्चय स्त्री गर्भको धारण करती है ॥

शंखपुष्पी कुमारी च कालीयकविभी-
तकम् । गोदुग्धेनसमंदेयंगर्भोभवति
निश्चितम् ॥

अर्थ–शंखाहूली, घीकुवार, हरिचन्दन और बहेडा यह सब गायके दूधमें पीसकर पीनेसे गर्भकी स्थिति होती है ॥

पारसीययवानी च पथ्याचूर्णं विभी-
तकम् । मूलं पुनर्नवायाश्च शंखपुष्पी
तथैव च ॥ गोदुग्धेन ऋतौ पीतं गर्भं
धत्ते न संशयः ॥

अर्थ–खुरासानी अजवायन, हरड, बहेडा, पुनर्नवेकी जड और शंखाहूली इन सबको गायके दूधमें पीसकर ऋतुकालमें पीनेसे निश्चय गर्भ रहजाता है ॥

अपामार्गस्य मूलं तु तंदुलोदकसंयुतम् । वन्ध्यानां चापि नारीणां गर्भधारणमुत्तमम् । लिंगी कुशांकुरायुक्ता दुग्धेन सह गर्भधृक् ॥

अर्थ-चिरचिटेकी जडको चावलोंके जलके साथ पीनेसे वन्ध्या स्त्रीभी गर्भको धारण करती है । शिवलिंगी और दाभकी जडको दूधके साथ पीनेसे गर्भ रहजाता है ॥

बीजं तिक्तवदामजं त्रिदिनतश्चोर्ध्वं जले पोषितं पीतं तद्रसमेव चाथ नियमात्स्नाने च मासावधि । पानं मानपलोन्मितं निगदितं गर्भं दधेद्वै क्षणात्पुत्रं वै गुणरूपलक्षणयुतं वन्ध्या प्रसूयेत्पटुम् ॥

अर्थ-कडवे बादामकी मींगको ऋतुके चौथे दिन शुद्ध होकर पानीमें पीसकर तीन दिनतक पीनेसे स्त्री तत्काल गर्भको धारण करतीहै और उससे गुणवान् रूपवान् सब लक्षणोंसे युक्त वन्ध्या स्त्रीको भी पुत्र उत्पन्न होताहै ॥

सपिप्पली केशर शृंगबेरक्षौद्रोषणं तद्धि घृतेन पीतम् । वन्ध्यापि पुत्रं लभते हठेन योगो हि शास्त्रेषु मुनिप्रदिष्टः ॥

अर्थ-पीपल, नागकेशर अदरखका रस और मिरच इन चार औषधियोंको घीमें मिलाकर चाटनेसे वन्ध्या स्त्रीके भी पुत्र उत्पन्न होताहै ऐसा मुनियोंने शास्त्रमें कहा है ॥

नागकेशरपुष्पाणां चूर्णं गोसर्पिषा

समम् ॥ पीतं स्त्री लभते गर्भमृतौ दुग्धान्नभोजनम् ॥

अर्थ—नागकेशरका चूर्ण गायके घीके साथ ऋतुके समय चाटनेसे अथवा पीनेसे स्त्री गर्भको धारण करती है इसपर दूधभातका भोजन करना चाहिये ॥

लक्ष्मणा शिखिमूलं वा दुग्धे पीत्वा दिनत्रयम् । ऋतौ जाते स्त्रियो गर्भं गृह्णीयुर्नात्र संशयः ॥

अर्थ—लक्ष्मणाकी जड और मोरशिखाके जडको दूधमें पीसकर तीन दिन पीनेसे स्त्री अवश्य गर्भको धारण करती है इसमें संशय नहीं ॥

कुांडकाश्वगन्धा च कर्कोटी शंखचूलिका । एकैका कुरुते गर्भं पानात्क्षीरेण योषिताम् ॥

अर्थ—कटसरैयाकी जड (पियावांसा) असगन्ध, ककोडा, शंखाहूली यह प्रत्येक औषधि गर्भको धारण कराती हैं अथवा चारों औषधियोंको गायके दूधमें पीसकर पीनेसे स्त्री गर्भको धारण करती है ॥

कलिंगं त्रिफला व्योषं सैन्धवं रक्तचन्दनम् । जीरेऽश्वगन्धा चक्राह्वगुग्गुलू द्वे कुबेरके ॥ एलीयकं तथा नीली वल्लतुर्यमितं पुनः । उष्ट्रासभविड्भस्मचूर्णं शीतोदकेन च ॥ स्त्रीणां पुत्राप्तिकृद्गर्भसर्वदोषनिवारणम् । वन्ध्याया मृतवत्साया रोगहृत्परमामृतम् ॥

अर्थ—इन्द्रजौ, त्रिफला(हरड, बहेडा, आमला) त्रिकुटा (सोंठ, मिरच, पीपल) सैंधानोन, लाल

चन्दन, जीरा, कालाजीरा, असगन्ध, कुडेकी छाल, गूगल, अजवायन, एलुआ, नील, ऊंटकी लीद, और गधेकी लीदकी भस्म यह सब औषधि एक एक तोला लेकर चूर्ण करके इस चूर्णको ठण्डे पानीके साथ स्त्रीको पीनेसे स्त्री गर्भको धारण करती है तथा यह चूर्ण गर्भके सम्बन्धी सब दोषोंका दूर करनेवाला है, बाँझ स्त्री या जिसके सन्तान होकर मरजाती हैं उन स्त्रियोंके रोगोंके नाश करनेके लिये यह चूर्ण अमृतकी समान गुण करता है ॥

पथ्यापथ्य ।

वन्ध्या स्त्रियोंको जो पदार्थ पथ्य हैं उनको करते हैं-मनको उद्विग्न करनेवाले पदार्थ, जिमीकंद, खटाई, कांजी, दाहकारक पदार्थ, और तीक्ष्ण पदार्थ वन्ध्या स्त्रियोंको नहीं देने चाहिये ॥

बाझ कंकोडेकी जड सुफेद कटेरी भुईखक-साकी जड, शिवलिंगी, ऋषभक औषधि, लक्ष्मणा शंखाहूली, लौकीकी जड, जटामांसी, सूर्य्यवल्ली, और सतावर यह सब वस्तु वन्ध्या स्त्रीको पथ्य हैं॥

अन्य स्त्रीकी पहरीहुई फूलोंकी माला और वस्त्र, रजस्वलास्त्रीका प्रसंग, दूसरी स्त्रियों-का स्नान कियाहुआ जल इन सब पदार्थोंको वन्ध्या स्त्री त्यागदेवे ।

मतान्तर ।

वन्ध्या स्त्रीकी औषधि करते समय ऋतुसे दश दिन पहिले साधारण और हलका जुलाब देवे और मासिक धर्मके दिनसे चौथे दिन शुद्ध होकर सात दिनतक तेल, लालमिरच, खटाई, हींग और खारा पदार्थ इन सबका परहेज रक्खे, दूध, चावल अथवा मूंगका भोजन करावे अथवा हलके पदार्थोंका भोजन करावे ॥

मलमूत्रका वेग, उद्वेग, भय, शोक, कसरत, परिश्रम, दिनमें सोना, रात्रिमें जागना, शीत और गर्मी इन सबको त्यागदेवै, परपुरुषपर भ्रातृभाव रक्खै इस प्रकार पथ्यसे रहकर अपने पतिकी इच्छानुसार जो स्त्री वर्त्तती है उसके उत्तम सर्वगुणसम्पन्न सुन्दर सन्तान होती है ॥

इति श्रीमुरादाबादनिवासी आयुर्वेदोद्धारक कविवर
लालाशालग्रामजीके कृपापात्र–वैद्य शंकर-
लाल हरिशंकरकृत वन्ध्यातंत्र समाप्त ।
